ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23065
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23065

CONFERENCE PAPER

आत्मनिर्भर भारत और इंडी संगीत: परंपरा से आधुनिकता तक का सफर

Vidhi Sharma

1. Research Scholar (Music Department) MLSU Organisation– Department of Music University College of Social Sciences and Humanities Mohanlal Sukhadia University; Udaipur, Rajasthan, India.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
आत्मनिर्भर भारत, इंडी संगीत (Indie Music), स्वतंत्र कलाकार, वोकल फॉर लोकल, रचनात्मक स्वतंत्रता, होम स्टूडियो

Abstract

यह शोध पत्र भारतीय संगीत में 'आत्मनिर्भरता' की ऐतिहासिक जड़ों और वर्तमान 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के तहत 'इंडी संगीत' (Independent Music) के उभरते परिदृश्य का विश्लेषण करता है। भारतीय संगीत गुरु-शिष्य परंपरा, रियाज़ और स्वदेशी वाद्य यंत्रों के निर्माण के माध्यम से सदैव से आत्मनिर्भर रहा है। वर्ष 2020 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान और 'वोकल फॉर लोकल' की पहल ने संगीत क्षेत्र को आर्थिक और सामाजिक मजबूती प्रदान की है। विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के बाद, डिजिटल क्रांति ने 'स्वतंत्र कलाकारों' (Indie Artists) को बड़े म्यूजिक लेबल्स और बॉलीवुड पर निर्भरता छोड़कर स्वयं का संगीत बनाने, रिकॉर्ड करने और वैश्विक स्तर पर वितरित करने का अवसर दिया है। यह शोध स्वतंत्र संगीतकारों को मिलने वाली रचनात्मक स्वतंत्रता, होम स्टूडियो तकनीक, डिजिटल डिस्ट्रीब्यूशन (जैसे DistroKid, TuneCore) और रॉयल्टी के माध्यम से प्राप्त होने वाली आर्थिक स्थिरता पर प्रकाश डालता है। अंततः, यह लेख स्पष्ट करता है कि कैसे यह अभियान कलाकारों के लिए नए द्वार खोल रहा है, जहाँ गुणवत्तापूर्ण संगीत के लिए सफलता की कोई सीमा नहीं है।

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Introduction:-

भारतीय संगीत हमेशा से ही आत्मनिर्भर रहा है। चाहे किसी कलाकार का गुरु ढूंढना हो, अपनी कला का रियाज़ करके उसे निखारना हो, या खुद को समाज और मंच के लायक बनाना हो, खुद भारतीय वाद्य यंत्र बनाना, यह सब आत्मनिर्भरता का प्रमाण है।

Corresponding Author:- Vidhi Sharma
Address:-Research Scholar (Music Department) MLSU Organisation– Department of Music University College of Social Sciences and Humanities Mohanlal Sukhadia University; Udaipur, Rajasthan, India.

भारत के हर क्षेत्र का अपना एक लोक संगीत है। भारत के हर राज्य का, हर कोने का लोक संगीत व आदिवासी संगीत अलग है। उनके गाने, उनके वाद्य यंत्र—सब कुछ हमेशा से आत्मनिर्भर ही था। चाहे पैसा कमाना हो, अपनी कला दिखाना हो, या सभी कलाओं को मंच देना हो—एक म्यूज़िशियन दूसरे म्यूज़िशियन की मदद करता था।जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2022 आत्मनिर्भर भारत पहलशुरू की,इसका उद्देश्य है की विदेशी निर्भरता छोड़कर स्वदेशी अपनाने। इससे संगीत, जो पहले से आत्मनिर्भर था, और मजबूत हुआ। इस फ्लैगशिप सेल्फ़-रिलायंट कैंपेन ने बहुत समर्थन दिया।पहले जहाँ सभी कलाकार खुद की पहचान बनाने में जुटे थे—संगीत का प्रचार करना, कार्यक्रम आयोजित करना, अपनी कला का प्रदर्शन करना, अब भारत सरकार ने उनकी इस जिम्मेदारी में सहायता की कोशिश की है।

आत्मनिर्भर भारत संगीतकारों को मजबूती दे रहा है। पहले संगीतकार अपनी रोज़ी-रोटी के लिए खुद अपने बलबूते पर दौड़-भाग करते थे अपनी कमाई का साधन ढूंढते। लेकिन यह कहना अतिशयोक्ति होगी कि संगीत को अर्थव्यवस्था में सहायता केवल आत्मनिर्भर भारत से ही मिली।फिर भी, यह पूरी तरह गलत भी नहीं कि आत्मनिर्भर भारत ने संगीतकारों को अधिक पोषण और समर्थन प्रदान किया।2020 कोविड महामारी के बाद, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारत को आत्मनिर्भर बनाने का अभियान शुरू किया। इसकी घोषणा महामारी के बीच की गई थी। सरकार ने देश के उत्पादकों को प्रोत्साहन देने और अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने का कार्य किया। इसका मुख्य कारण था विदेशी निर्भरता छोड़कर स्वदेशी अपनाना और स्वदेशी निर्यात बढ़ाना।

प्रमुख उद्देश्य:-

- भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का केंद्र बनाना
- निजी क्षेत्र की क्षमताओं को बढ़ावा देना
- वोकल फॉर लोकल के जरिए भारतीय निर्माताओं को समर्थन
- कृषि, वस्त्र, आभूषण सहित भारतीय

हस्तशिल्प को वैश्विक बाजारों में ले जाना आत्मनिर्भर भारत का संगीत पर प्रभाव : 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान की शुरुआत वर्ष 2020 में कोविड-19 महामारी के पश्चात प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा की गई थी। इस अभियान का मुख्य उद्देश्यभारतीय उत्पादकों को प्रोत्साहन देना और अर्थव्यवस्था को पुनः पटरी पर लाना था। इसके मूल में विदेशी वस्तुओं के स्थान पर स्वदेशी को अपनाना और स्वदेशी उत्पादों का अधिक से अधिक निर्यात करना शामिल है। इसके प्रमुख लक्ष्यों में भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला के केंद्र के रूप में विकसित करना और निजी क्षेत्र की क्षमताओं को सरकारी सहायता से बढ़ावा देना रहा है। संगीत के क्षेत्र में इसका प्रभाव 'वोकल फॉर लोकल' के माध्यम से स्पष्ट दिखता है, जहाँ कृषि, वस्त्र और आभूषणों की भाँति भारतीय कला, शिल्प और संगीत को भी वैश्विक बाजारों में प्रवेश दिलाया जा रहा है। आत्मनिर्भर भारत अभियान ने भारतीय संगीत उद्योग में 'लोक संगीत' (Folk Music) और स्वतंत्र कलाकारों (Independent/Indie Artists) तथा क्षेत्रीय शैलियों को विशेष बढ़ावा दिया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से कलाकारों की आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता बढ़ी है। स्थानीय लोक संगीत को मुख्यधारा और बॉलीवुड में पुनर्जीवित किया जा रहा है, जिससे भारतीय संस्कृति को वैश्विक पहचान

मिल रही है। इसके प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं:

- **स्वदेशी एवं क्षेत्रीय संगीत का पुनरुद्धार:** 'वोकल फॉर लोकल' के तहत क्षेत्रीय संगीत के प्रति रुझान बढ़ा है।
- **स्वतंत्र कलाकारों (Indie Artists) की वृद्धि:**डिजिटल स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब(YOU-TUBE), स्पॉटिफाई(SPOTIFY), जियोसावन(JIO-SAAVN), इन्स्टाग्राम(INSTAGRAM) और स्मूल(SMULE) के कारण कलाकार अब सीधे दर्शकों तक पहुँच

रहे हैं। उन्हें अब किसी बड़े ब्रांड या म्यूजिक लेबल की अनिवार्यता नहीं है; वे तकनीक की सहायता से स्वयं संगीत का उत्पादन और विक्रय कर रहे हैं, जो आत्मनिर्भरता की भावना को सुदृढ़ करता है।

- **सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और आर्थिक स्थिरता:**स्वदेशी संस्कृति और गीतों को विदेशों तक पहुँचाने से पारंपरिक संगीतकारों को फिल्म और ऑनलाइन मंचों के माध्यम से निश्चित आय प्राप्त हो रही है। यह न केवल हमारी संगीत विरासत को नई पीढ़ी से जोड़ रहा है, बल्कि इसे आर्थिक रूप से टिकाऊ भी बना रहा है।

संगीत अब केवल कोई मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि एक आर्थिक और सामाजिक स्तंभ के रूप में:भारतीय संगीत केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की क्षमता रखता है। आत्मनिर्भर भारत के कारण संगीतकार अब 'स्वतंत्र कलाकार' के रूप में अपनी धुनें स्वयं तैयार कर डिजिटल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध हो रहे हैं। इस पहल से आदिवासी संगीत, स्थानीय कलाओं और स्वदेशी वाद्य यंत्रों (जैसे मिरज का सितार और तानपुरा, तबला, ढोलक, बाँसुरी) के निर्माण को प्रोत्साहन मिला है, जिससे वाद्य यंत्र निर्माताओं को रोजगार के नए अवसर मिल रहे हैं। डिजिटल क्रांति और क्रिएटर-प्रेन्योर (Creator-preneur):डिजिटल इंडिया और इंटरनेट की उपलब्धता ने 'क्रिएटर-प्रेन्योर' शब्द को जन्म दिया है, जहाँ युवा स्वयं ही निर्माता, वितरक और मार्केटर है। संगीत उत्पादन, वाद्य यंत्र निर्माण और इवेंट मैनेजमेंट अब सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों की श्रेणी में आ गए हैं, जिन्हें सरकारी सहायता और ऋण प्राप्त हो रहा है।

'जीरो फेस्टिवल', 'हॉर्नबिल फेस्टिवल' और उदयपुर के 'शिल्पग्राम' जैसे आयोजनों से ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हो रही है। संगीत क्षेत्र पर 'आत्मनिर्भर भारत' के प्रभाव का विश्लेषण करते हुए यह तथ्य उभर कर आता है कि'इंडी संगीत', जो पूर्व में भी अस्तित्व में था, वर्तमान में अत्यधिक लोकप्रिय एवं चर्चा का विषय बन गया है। यद्यपि इंडी संगीत की उपस्थिति पहले भी थी, किंतु आत्मनिर्भरता के विचार ने इसे मुख्यधारा में लाकर एक नई विशिष्ट पहचान और व्यापक मंच प्रदान किया है। इंडी संगीत अभी बहुत विख्यात हो रहा है। हालाँकि, अभी भी कुछ लोग इस बात सेअनभिज्ञ हैं कि इंडी संगीत वास्तव में क्या होता है, लेकिन इस संगीत को काफी समर्थन मिला है, एक नई पहचान मिली है और भारत सरकार की पहल से काफी ज्यादा मदद मिली है। इंडी संगीत का मूल मतलब होता है 'स्वतंत्र संगीत'—ऐसा संगीत जो कम बजट में और उच्च रचनात्मकता दिखाता है। यह ऐसी संगीत की शैली या 'जोनर' है जो किसी और श्रेणी के अंदर नहीं आता; न ही यह शास्त्रीय संगीत के अंदर आता है, न ही जैज़, पॉप, हिप-हॉप, सुगम संगीत, भजन या गजल में आता है। यह अपनी एक स्वतंत्र शैली है जिसे स्वतंत्र संगीत या इंडी म्यूजिक के नाम से जाना जाता है।इसमें कलाकार को रचनात्मक स्वतंत्रता होती है, इसका निर्माण कम बजट में होता है और इसकी अपनी अलग श्रोता वर्ग (ऑडियंस) होती है। ये कलाकार किसी लेबल या फिल्म के लिए नहीं गाते, बल्कि स्वतंत्र रूप से अपनी पहचान खुद बनाते हैं।

इंडी संगीत कई संबंधित शैलियों का वर्णन करता है, जिसमें गिटार या ऐसा कोई भी वाद्य यंत्र (इंस्ट्रूमेंट) जो कहीं भी ले जाकर आराम से बजाया जा सके, उपयोग होता है। कई जगह पर इंडी संगीत को 'डीआईवाई' (Do-It-Yourself) वाला संगीत भी कहा गया है। यह किसी विशेष शैली से नहीं बंधा है, इसकी अपनी शैलियाँ हो सकती हैं जैसे इंडी पॉप, इंडी रॉक, इंडी लोक संगीत (फोक) या इंडी इलेक्ट्रॉनिक।वैश्विक स्तर पर यह 1980 के दशक में उभरा और भारत में यह साल 2000 के प्रारंभ में आया। इंडी संगीत बनाने वाले लोग किसी से बंधे नहीं रहते, वे अपना काम खुद करते हैं। अब 21वीं सदी में इंटरनेट के माध्यम से हम आसानी से अपनी चीज़ें वैश्विक स्तर पर पहुँचा सकते हैं, जिससे संगीत प्रेमियों को नए कलाकारों के बारे में जानकारी मिलने लगी है। एक इंडी आर्टिस्ट अपना संगीत स्वतंत्र रूप से बना सकता है और अपनी मर्जी से कहीं भी उसका प्रदर्शन कर सकता है। उसे किसी लेबल की जरूरत नहीं है, यह एक स्वतंत्र रिकॉर्ड लेबल है। इसका वितरण भी वह अपने तरीके से कर सकता है जैसे कि स्पॉटिफाई या साउंडक्लाउड पर, जहाँ उसे गाने की रॉयल्टी मिलती रहती है। सोशल मीडिया और स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स पर वे खुद अपने संगीत का निर्माण, रिकॉर्डिंग, विपणन (मार्केटिंग) और रिलीज कर रहे हैं। वे सोशल मीडिया का उपयोग करके सीधा और स्वयं प्रेरित तरीके से रचनात्मक वितरण कर रहे हैं।

अगर किसी कलाकार का संगीत लोकप्रिय प्लेलिस्ट में शामिल हो जाता है या सोशल मीडिया पर लोकप्रियता हासिल कर लेता है, तो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स उन्हें बड़ी राशि देते हैं। चूंकि इंडी संगीत किसी लेबल के अनुबंध में नहीं होता, इसलिए वे कम बजट में अपने गानों में ज्यादा से ज्यादा रचनात्मकता दिखा सकते हैं और अपने हिसाब से उसका वितरण कर सकते हैं।एक स्वतंत्र संगीतकार होने के वर्तमान परिदृश्य में अनेक लाभ हैं, चाहे वह सोशल मीडिया का मंच हो, ऑफलाइन कार्यक्रम हों या एक संगीत निर्माता के रूप में कार्य करना हो। इसके प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:

- **कार्य की स्वतंत्रता और कलात्मक अन्वेषण:** स्वतंत्र संगीतकार होने का प्राथमिक लाभ यह है कि हमें किसी औपचारिक नौकरी के बंधन में नहीं रहना पड़ता। यह स्वतंत्रता हमें अपनी कला को गहराई से समझने (Explore करने) और नए अनुभवों को प्राप्त करने का पर्याप्त समय प्रदान करती है। यही अनुभव कालांतर में हमारे संगीत और प्रस्तुतीकरण में स्पष्ट रूप से झलकते हैं।
- **सोशल मीडिया की भूमिका और पहचान:** वर्तमान समय में सोशल मीडिया स्वतंत्र कलाकारों के लिए एक अत्यंत प्रभावशाली मंच है। जब हम नियमित रूप से अपनी विषय-वस्तु (Content) साझा करते हैं: जैसे कि गायन, रियाज़, प्रदर्शन या रचनात्मक विचार, तो श्रोताओं से उत्साहजनक प्रतिक्रिया प्राप्त होती है। यह प्रतिक्रिया न केवल प्रेरणा देती है बल्कि भविष्य में बेहतर कार्य के लिए प्रोत्साहित भी करती है। इसके माध्यम से कलाकार की पहचान विस्तृत होती है और नए अवसरों के द्वार खुलते हैं।
- **लाइव प्रदर्शन और प्रत्यक्ष अनुभव:**एक स्वतंत्र संगीतकार के लिए 'ऑफलाइन लाइव शोज' का विशेष महत्व है। लाइव प्रदर्शन से आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, मंच का अनुभव प्राप्त होता है और श्रोताओं से सीधा जुड़ाव स्थापित होता है। इसका एक व्यावहारिक लाभ यह भी है कि लाइव कार्यक्रमों से तत्काल आय सुनिश्चित होती है, और अनुभव व पहचान बढ़ने के साथ-साथ इस आय में भी निरंतर वृद्धि होती है।
- **यात्रा और नेटवर्किंग के अवसर:**इस क्षेत्र में कार्य करते हुए नए शहरों और स्थानों की यात्रा करने का अवसर मिलता है, जो अक्सर आयोजकों द्वारा प्रायोजित होती है। इससे नए लोगों से मिलने, विभिन्न सांस्कृतिक अनुभवों को आत्मसात करने और अपने व्यावसायिक नेटवर्क को बढ़ाने का अवसर प्राप्त होता है।
- **संगीत निर्माण और डिजिटल अधिकार:** एक संगीत निर्माता के रूप में हम स्वयं का संगीत सृजित और रिकॉर्ड कर सकते हैं। इसे विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर रिलीज करने से रॉयल्टी और अन्य डिजिटल आय के विकल्प भी उपलब्ध होते हैं। स्वतंत्र संगीतकार होने का सबसे बड़ा लाभ 'रचनात्मक स्वतंत्रता' है। हम अपनी पद्धति से संगीत का सृजन कर उसे जनमानस तक पहुँचा सकते हैं और धीरे-धीरे अपने परिश्रम से एक सुदृढ़ पहचान और स्थायी आय दोनों निर्मित कर सकते हैं। स्वतंत्र संगीतकार बनने के मुख्य बिंदु:
- **संगीत की जानकारी और वाद्य यंत्र:** आपको संगीत आना चाहिए, ऐसा जरूरी नहीं है कि आप सब जानते हों, पर आपको थोड़ा बहुत संगीत वाद्यों का ज्ञान होना चाहिए जो आपको पसंद हों, ताकि आप अपना संगीत बना सकें। आपको संगीत की जानकारी होनी चाहिए कि संगीत कैसे काम करता है, आजकल की जनरेशन क्या सुनना चाहती है और ऐसा संगीत बनाएं जो सभी प्रकार के दर्शको को आकर्षक लगे।
- **अपना म्यूजिक और स्टाइल:** इंडिपेंडेंट आर्टिस्ट बनने के लिए खुद ही अपना म्यूजिक बनाना, खुद ही उसे प्रमोट करना और किसी बड़े रिकॉर्ड लेबल को बिना किसी बड़े लेबल के साथ अनुबंध किए अपनी पहचान बनाना सबसे जरूरी है। इसके लिए पहले अपने स्टाइल को खोजो कि आपका ओरिजिनल संगीत क्या है, जो आपको दूसरी संगीतकारों की भीड़ से अलग बनाता है।
- **होम स्टूडियो सेटअप:** इसके बाद आप अपना म्यूजिक रिकॉर्ड कर सकते हैं। आजकल एक छोटा सा होम स्टूडियो सेटअप करना बहुत आसान है, जो लगभग 20 से 30 हजार में हो जाएगा। इसमें आपको एक लैपटॉप, एक डिजिटल ऑडियो वर्कस्टेशन (DAW) जैसे कि FL Studio या Logic Pro और एक अच्छे माइक की जरूरत है, ताकि आप अपना गाना रिकॉर्ड करके उस पर कार्य कर सकें।
- **साउंड इंजीनियरिंग और डिस्ट्रीब्यूशन:** यहाँ साउंड इंजीनियरिंग इसी काम आती है कि आपको पता हो कि आप अपना संगीत कैसे बना रहे हैं और अपना म्यूजिक कैसे तैयार कर रहे हैं (मिक्सिंग और मास्टरिंग)। इसके बाद बात आती है म्यूजिक

डिस्ट्रीब्यूशन की। अपना संगीत बनाने के बाद उसे इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर अपलोड करें, जिससे आप अपनी जनता और दर्शक ढूंढ सकें।

- **स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स:** आप अपने गाने स्पॉटिफाई, एप्पल म्यूजिक और जियोसावन जैसे प्लेटफॉर्म्स पर भी डाल सकते हैं। इससे आप अपने संगीत को दुनिया भर में सुना सकते हैं ताकि दुनिया के कोने-कोने तक आपका संगीत पहुंच सके।DistroKidऔरTuneCoreजैसे प्लेटफॉर्म्स इंडिपेंडेंट आर्टिस्ट के लिए बहुत इम्पॉर्टेंट हैं। प्रमोशन के लिए इंस्टाग्राम के अलावा यूट्यूब का भी यूज करें ताकि लोग आपके गानों तक जल्दी पहुंच सकें।
- **कम्युनिटी और कोलैबोरेशन:** इससे आपकी एक कम्युनिटी तैयार हो जाएगी जो सिर्फ आपको सुनना चाहेगी। आप किसी दूसरे इंडी आर्टिस्ट के साथ कोलैबोरेशन भी कर सकते हैं, जिससे विविध प्रकार के लोग आपको सुनेंगे। अगर आपका म्यूजिक सबको पसंद आने लगता है, तो आपको कॉलेज फेस्ट या इवेंट्स में शोज मिलना स्टार्ट हो जाते हैं, जिससे अनुभव, लाइव ऑडियंस और पैसा मिलता है।
- **कॉपीराइट और रॉयल्टी:** आपको स्पॉटिफाई जैसी चीजों पर कॉपीराइट के अधिकार और रॉयल्टी भी मिलती है, जिससे अपने बनाए हुए म्यूजिक के आपको पैसे मिलते रहते हैं। इस प्रकार आप बिना किसी बॉलीवुड म्यूजिक के भी फेमस हो सकते हैं। आत्मनिर्भर भारत और इंडिपेंडेंट आर्टिस्ट का समावेश कलाकारों के लिए बहुत लाभदायी रहा है। अब उन्हें किसी के वैलिडेशन की जरूरत नहीं है; अगर उनका संगीत अच्छा है, तो उनके लिए स्काई इज द लिमिट (Sky is the limit) है।

निष्कर्ष:-

भारतीय संगीत की ऐतिहासिक आत्मनिर्भरता और वर्तमान 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के समन्वय ने संगीत जगत में एक क्रांतिकारी बदलाव पेश किया है। आज के इस डिजिटल युग में 'इंडी संगीत' केवल एक विधा नहीं, बल्कि कलाकारों की स्वावलंबन की शक्ति का प्रतीक बन चुका है। अब एक स्वतंत्र कलाकार को अपनी पहचान स्थापित करने के लिए किसी बड़े लेबल या बॉलीवुड के ठप्पे (Validation) की आवश्यकता नहीं है। यदि आपके संगीत में मौलिकता है और आप अपनी कला को दुनिया तक पहुँचाने का हुनर जानते हैं, तो आपके लिए उन्नति के सारे द्वार खुले हैं। जैसा कि सुप्रसिद्ध मुहावरा है-**"द स्काई इज द लिमिट" (**The sky is the limit)-अर्थात अब आपकी सफलता की कोई निश्चित सीमा नहीं है; आप अपनी मेहनत और रचनात्मकता के दम पर जितनी चाहें उतनी ऊँचाइयाँ छू सकते हैं और एक वैश्विक मुकाम हासिल कर सकते हैं।

सन्दर्भ:-

(वेबसाइट और लेख**):-**

1. "Independent Music." Wikipedia: The Free Encyclopedia, Wikimedia Foundation, 15 Mar. 2024, en.wikipedia.org/wiki/Independent_music.
2. "Self-Reliant India: Aatmanirbhar Bharat Abhiyaan." India Brand Equity Foundation (IBEF), 2024, www.ibef.org/government-schemes/self-reliant-india-aatm-nirbhar-bharat-abhiyan.
3. "A Study on AatmaNirbhar Bharat Abhiyaan." International Journal of Novel Research and Development (IJNRD), vol. 6, no. 10, Oct. 2021, ijnrd.org/papers/IJNRD2110008.pdf. यूट्यूब वीडियो :
4. "Atmanirbhar Bharat Initiative and Music Industry." YouTube, uploaded by[Music Gateway], 2022, www.youtube.com/watch?v=u_Ik0oDNDWY.
5. "Growth of Indie Music in India." YouTube, uploaded by [Tom DuPree III], 2022, www.youtube.com/watch?v=Q_Q5b0ZLOiw.
6. "Independent Artists and Digital Revolution." YouTube, uploaded by [Zista EdVentures], 2022, www.youtube.com/watch?v=uDEDi-ApIvg.